

केरल में मुख्यमंत्री पर एक्शन नहीं, मुझ पर 36 केस : राहुल गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर तीखा हमला बोलते हुए आरोप लगाया कि वह केरल दौरे के दौरान शबरिमला मुद्दे पर चुप रहे, जो साफ संकेत है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) साथ काम कर रहे हैं। अदूर में कांग्रेस की एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष गांधी ने दावा किया कि नौ अप्रैल के लिए निर्धारित विधानसभा चुनाव में उनकी पार्टी को मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) और भाजपा के 'गठजोड़' से मुकाबला करना पड़ रहा है।



उन्होंने कहा, 'हम एलडीएफ के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं, जिसे भाजपा का पूरा समर्थन प्राप्त है। एक तरफ संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) है

और दूसरी तरफ माकपा-भाजपा का गठजोड़ है।' उन्होंने आरोप लगाया कि केरल में भाजपा (एलडीएफ को फायदा पहुंचाने के लिए) 'गुपचुप तरीके से काम कर रही है।' गांधी ने कहा, 'भाजपा यहां यूडीएफ को नहीं चाहती, क्योंकि वह जानती है कि राष्ट्रीय स्तर पर उसे चुनौती देने वाली एकमात्र ताकत कांग्रेस है। भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के साथ हमारी वैचारिक लड़ाई है।'

उन्होंने दावा किया कि जहां विपक्षी नेताओं के खिलाफ केंद्रीय एजेंसियां कार्रवाई कर रही हैं, वहीं केरल में एलडीएफ नेतृत्व पर ऐसा कोई दबाव नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया, 'मेरे खिलाफ 36 मामले दर्ज किए गए हैं और मुझसे लगातार 55 घंटे तक पूछताछ की गई है। लेकिन केरल के मुख्यमंत्री

या एलडीएफ नेताओं के खिलाफ ऐसी कोई कार्रवाई नहीं हुई है।' रविवार को पलक्कड़ में मोदी द्वारा दिए गए भाषण का जिक्र करते हुए गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री अक्सर मंदिरों और धर्म की बात करते हैं, लेकिन शबरिमला मामले पर चुप रहे।

उन्होंने कहा, 'वह शबरिमला के बारे में बोलना भूल गए। उन्होंने भगवान अयप्पा मंदिर से जुड़े मुद्दों का जिक्र नहीं किया। इससे साफ है कि भाजपा और एलडीएफ साथ काम कर रहे हैं।' कांग्रेस नेता ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री धार्मिक मुद्दों को तभी उठाते हैं, जब यह चुनावी रूप से उनके लिए फायदा पहुंचाने वाला होता है। उन्होंने कहा, 'उनके लिए अगर इससे वोट मिलते हैं, तो वह मंदिरों की बात करेंगे, अन्यथा चुप रहेंगे।' उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अगर यूडीएफ सत्ता में आती है तो मंदिर से संबंधित कथित अनियमितताओं के लिए जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराया जाएगा।

सोनिया गांधी को अस्पताल से मिली छुट्टी

नई दिल्ली। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता और सांसद सोनिया गांधी, जिन्हें बुखार के कारण सर गंगा राम अस्पताल में भर्ती कराया गया था, मंगलवार को आगे के इलाज और घर पर निगरानी के लिए अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। सर गंगा राम अस्पताल के अध्यक्ष डॉ. अजय स्वरूप के अनुसार, डॉ. डी.एस. राणा, डॉ. एस. नंदी और डॉ. अरूप बसु की देखरेख में उनका एंटीबायोटिक्स से इलाज किया गया और इलाज का उन पर अच्छा असर हुआ। इससे पहले डॉक्टरों ने बताया था कि सोनिया गांधी की हालत में उत्कृष्ट सुधार हुआ है और अब वे पूरी तरह से ठीक हैं। उन्हें जल्द ही अस्पताल से छुट्टी देने का फैसला लिया जाएगा। अस्पताल के अध्यक्ष डॉ. अजय स्वरूप के अनुसार, गांधी को अभी भी इंटरवेनस एंटीबायोटिक्स दी जा रही हैं, जो कुछ और दिनों तक जारी रहेंगी, हालांकि उनके सभी पैरामीटर सामान्य सीमा के भीतर हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें अस्पताल से छुट्टी देने का निर्णय मरीज और इलाज करने वाले चिकित्सक से परामर्श के बाद संयुक्त रूप से लिया जाएगा। अन्यथा, वह पूरी तरह स्वस्थ हैं।



'लोकसभा सीटों में 50% बढ़ोतरी दक्षिण भारत के लिए अन्यायपूर्ण': कांग्रेस

नई दिल्ली। लोकसभा की कुल सीटों की संख्या में 50 प्रतिशत तक की वृद्धि करने के केंद्र सरकार के कथित प्रस्ताव पर राजनीतिक घमासान शुरू हो गया है। कांग्रेस ने इस कदम को 'अन्यायपूर्ण' और 'दक्षिण भारत के हितों के खिलाफ' बताते हुए तीखा हमला बोला है।

क्या है कांग्रेस का आरोप?

पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर दावा किया है कि मोदी सरकार महिला आरक्षण को लागू करने की पृष्ठभूमि में लोकसभा का आकार बढ़ाने के लिए एक विधेयक लाने की तैयारी कर रही है। रमेश के अनुसार:-

सीटों का गणित: प्रस्ताव के तहत लोकसभा की कुल सीटों में 50% की वृद्धि की जाएगी,



जिसका सीधा असर प्रत्येक राज्य को आवंटित सीटों पर पड़ेगा।

क्षेत्रीय असंतुलन: कांग्रेस का तर्क है कि इससे उत्तरी राज्यों को तो भारी फायदा होगा, लेकिन दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वोत्तर के छोटे

राज्यों का संख्याबल कमजोर हो जाएगा।

रमेश ने 'एक्स' पर पोस्ट कर दावा किया, "मोदी सरकार लोकसभा का आकार 50 प्रतिशत बढ़ाने के लिए एक विधेयक को पारित करने का प्रस्ताव कर रही है। प्रत्येक राज्य को आवंटित सीट की संख्या में भी 50 प्रतिशत की वृद्धि का प्रस्ताव है।" उन्होंने कहा, "यह तर्क देना भ्रामक है कि कुल सीट में 50 प्रतिशत की वृद्धि न्यायसंगत है।" कांग्रेस नेता ने कहा कि अनुपात फिलहाल नहीं बदल सकता है लेकिन इसके गहरे निहितार्थ हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

रमेश ने कहा, "लोकसभा में विभिन्न राज्यों के मौजूदा संख्याबल के अंतर में किसी भी तरह की वृद्धि से दक्षिण भारतीय राज्यों को नुकसान

होगा।" उन्होंने कहा, "उदाहरण के लिए वर्तमान में उत्तर प्रदेश में 80 सीट हैं और तमिलनाडु में 39 सीट हैं। प्रस्तावित विधेयक के साथ, उत्तर प्रदेश की लोकसभा सीट की संख्या बढ़कर 120 हो जाएगी जबकि तमिलनाडु में अधिकतम 59 सीट हो जाएंगी।

इसी तरह, केरल में लोकसभा की 20 सीट बढ़कर 30 हो जाएंगी, जबकि बिहार में 40 से बढ़कर 60 सीट हो जाएंगी। कुल मिलाकर, दक्षिणी राज्यों को 66 सीट का फायदा होगा जबकि उत्तरी राज्यों को 200 सीट का फायदा होगा।" रमेश ने दावा किया कि प्रधानमंत्री मोदी एकतरफा कानून तैयार कर रहे हैं जिससे दक्षिण, पूर्वोत्तर और पश्चिम के छोटे राज्यों को नुकसान होगा।

विशेष



‘अपनी तारीख और विरासतें बचाने का समय!’

‘एक कौम की अपनी समाजी-मानवशास्त्रीय, भाषायी और विशिष्ट कबीलायी सांस्कृतिक पहचान से विकसित हुए इलाका ए मेवात की उत्पत्ति, विकास और सामूहिक हिजरत से संबंधित बेशक बहुत सारी बहसे और थ्योरीज़ हैं लेकिन सदियों के सतत संघर्षों और संगठित ताकत के बल पर स्थायी और सुरक्षित आजीविका के दौर में काला पहाड़(अरावली)की चोटियों के चारों ओर दिल्ली-हाँसी-आगरा और बैराठ के आसपास तक आबाद हुए विशाल तारीखी खिते ‘इलाका ए मेवात’ के राजनैतिक केंद्र दिल्ली के तख्त पर तोमर शाही परंपरा की पहचान से हमारे बुजुर्गों ने सदियों तक कभी सफल हुकूमत का डंका बजाया था!

लेकिन जब राजनैतिक परिस्थितियाँ बदली और सत्ता की धुरी फिसलकर विदेशी सुल्तानों और बादशाहों के हाथों में गयी तो हमारे बुजुर्गों ने अपने स्वाभिमान, अस्मिता, शाही वजूद, गंगा-जमुना तहजीब और ऐतिहासिक पहचान को बचाए रखने के लिए बलबनी सुल्तानों से लेकर मुगलिया शासकों, और बाद में साम्राज्यवादी शोषण के प्रतीक अंग्रेजों के विरुद्ध एक लंबा, कठिन, लेकिन गौरवशाली संघर्ष किया!

1857 के ग़दर से लेकर जंगे-आज़ादी के पूरे सफ़र में अनगिनत कुरबानियों और प्रयासों के बावजूद साम्राज्यवादी सत्ताओं ने भी हमारे विशाल और उपजाऊ क्षेत्र को हड़प लिया!

इसी तरह देश-विभाजन की तकलीफ़देह परिस्थितियों और मुख्य-धारा में आने के संघर्ष के सफ़र में हज़ारों बीघा पुश्तैनी विरासतें, न चाहते हुए भी हमारी मुट्ठी से फिसल गयी!

क़दम-क़दम पर अनगिनत इम्तहानों और कुर्बानियों के बावजूद हमारी प्रेरक पीढ़ियाँ सादगी, खुदगारी और तक़वे की राह पर चलते हुए हमें एक मुक़म्मल तारीखी पहचान, बुलंद मुक़ाम, और बड़ी बड़ी पुश्तैनी विरासतों की सरज़मीं सौंपी! यह वाक़ई, उनकी तरफ़ से हमें एक असाधारण, ग़ैरमामूली और अनमोल अमानतों का तोहफ़ा था!

साथियों, यदि हम दिन-रात और नस्ल-दर-नस्ल हाथ-पैरों में छाले लेकर पूर्ण-समर्पण के भाव से भी अपने बुजुर्गों के एहसानों और विरासतों का क़र्ज़ा अदा करने की कोशिश करें, तो भी हम कभी उनके एहसानों की पूर्ति नहीं कर सकते!

बेशक़, ख़ून-पसीने और ग़ैर मामूली कुर्बानियों में पला यह हमारे ऊपर, एक ऐसा पुश्तैनी और ग़ैर मामूली क़र्ज़ है जिसका भार और एहसान क़यामत तक मेवात से जुड़ी हर नयी नस्ल के कंधों पर बढ़ता चला जायेगा!

साथियों, लाख कोशिशों के बावजूद हमने अपनी विशाल और तारीखी विरासतें खोने का दुख झेला है! आज, जब बेरोज़गारी, महँगाई, बाज़ारवाद और खेती किसानों की बड़ी चुनौतियों का नाजुक दौर हमारे सामने मुंह बाये खड़ा है, ऐसे में हमें अपनी आने वाली नस्लों को हर हाल में शिक्षित, संस्कारित और ज़माने की ज़रूरत के मुताबिक़ सशक्त और हुनरमंद बनाने की कोशिश करनी होगी!

साथ ही, अनावश्यक क़र्ज़ और खर्चीली रस्मों-रिवाज़ों से परहेज़ रखते हुए, मितव्ययी जीवनशैली के साथ हर हाल में अपनी पुश्तैनी विरासतों की हिफ़ाज़त में खुद को वक़फ़ करना इलाका-ए-मेवात की आने नस्लों के लिए हमारी ओर से सबसे बड़ा और सच्चा तोहफ़ा होगा!’

**-डॉ ज़ाकिर हुसैन
सहायक आचार्य!**



"जैसे राक्षसों को खून की जरूरत पड़ती है, वैसे ही बीजेपी को दंगों की जरूरत पड़ती है।"

- प्रणीति शिंदे, सांसद, लोकसभा

ईरान की रूहानी शराफत बनाम अमरीका और इजराइल का वह वहशीपन

ईरान की रूहानी शराफत बनाम अमरीका और इजराइल का वह वहशीपन जिसने पूरी दुनिया की गर्दन पर तबाही का खंजर रखकर खाड़ी के सुल्तानों को उनकी कायरता का आईना दिखा दिया है।

जब तेहरान के चिरागों को बुझाने की नापाक कोशिश में ट्रंप के चेले नेहलथे लोगों पर मिसाइलें बरसा रहे थे तब दुनिया ने हैरत से देखा कि कैसे एक मुल्क तमाम अमानवीय ज़ख़्म सहकर भी अपनी तहजीब और रूहानी उसूलों की ढाल बनकर फौलाद की तरह सीना ताने खड़ा रहा और जालिमों के सामने घुटने टेकने से साफ़ इनकार कर दिया।

अमरीका ने जिस बेरहमी से 165 मासूम स्कूली कलियों को अपने बारूद से मटियामेट किया वह उसकी उस धिनौनी वहशत का सुबूत है जिस पर आज का सफ़ेदपोश अमरीका शर्मिंदा होने के बजाय अपनी फ़र्जी बहादुरी के झूठे कसीदे पढ़कर पूरी इंसानियत का मखौल उड़ा रहा है और खुद को जम्हूरियत का रहनुमा बता रहा है।

हॉर्मुज़ की लहरों के दो सौ मीटर नीचे दबा वह इंटरनेट का मायाजाल आज ईरान की एक छोटी सी अंगुली के इशारे पर है जो अगर कट गया तो दुनिया के पचानवे फीसद हिस्से में ऐसा कयामती डिजिटल अंधेरा छाएगा कि बैंक और जहाज सब कबाड़ बन जाएंगे और इंसानी तरक्की पल भर में धूल चाटने पर मजबूर हो जाएगी।

यह केवल ईरान का महान सन्न है कि वह दुनिया के दस ट्रिलियन डॉलर के धंधे और बेगुनाह आवाम की सहूलियत को बचाने के लिए खामोश है वरना एक कैंची की मार से वह पश्चिमी मुल्कों के गुरूर को गहरे खारे समंदर में हमेशा के लिए दफन कर सकता है जहां से निकलना किसी के बस की बात नहीं होगी।

ट्रंप की पांच दिन की खोखली मोहलत को ठेंगा दिखाकर नेतन्याहू ने जो आग लगाई है उसने अब कुवैत जैसे पड़ोसी मुल्कों को भी अंधेरे के कुएं में धकेल दिया है जिससे यह पूरी तरह साफ़ हो गया कि ये सब केवल जंग के वो लालची सौदागर हैं जिन्हें मासूमों की चीखों के सिवा कुछ सुनाई नहीं देता।

अमरीका ने आज न केवल अपने सामरिक सैन्य ठिकाने और रडार खो दिए हैं बल्कि उन खाड़ी के डरे हुए अरब देशों का भरोसा भी पूरी तरह गंवा दिया है जो अब तक वाशिंगटन की चौखट पर नाक रगड़ना ही अपनी सबसे बड़ी इबादत और अपनी हुकूमत की सलामती का एकमात्र बीमा समझते थे।

इजराइल के हैफा में जलते तेल भंडार और वहां मची चीख-पुकार इस बात की चश्मदीद गवाह है कि जो दूसरों के हँसते-खेलते घरों में आग लगाता है उसकी अपनी महफूज बस्ती भी कभी सलामत नहीं रहती और अब तो वहां के बाशिंदे अपना वतन छोड़कर दर-बदर भटक रहे हैं और अपनी ही सरकार को कोस रहे हैं।

कांग्रेस के दौर की वह शानदार और खुददार विदेश नीति आज याद आती है जब भारत हक के साथ खड़ा होता था मगर आज की हुकूमत तो ट्रंप की गोदी में बैठकर केवल मुल्क की साख को बढ़ा लगा रही है क्योंकि जब नेतृत्व कमजोर और डरपोक हो तो मुल्क की पहचान वैश्विक मंच पर भी धुंधली पड़ने लगती है।

जिस तरह से रूस ने प्रतिबंधों की धज्जियां उड़ाकर यूरोप की गर्दन मरोड़ी है उससे साफ़ है कि अब दुनिया का नक्शा बहुत तेजी से बदलने वाला है और नफरत की दुकान चलाने वाले इन फिरकापरस्त ताकतों को अब अपना बेरिया-बिस्तर समेटकर उन अंधेरी गुफाओं में दुबक जाना चाहिए जहां से ये नफरत की सियासत फैलाते थे।

आज अरब के सुल्तानों की खामोशी उनकी ऐतिहासिक कायरता की दास्तां बयां कर रही है क्योंकि वे भूल गए हैं कि जो आज तेहरान के साथ हो रहा है वह कल उनके महलों के दरवाजे पर भी दस्तक दे सकता है लेकिन ईरान ने साबित कर दिया कि हक की राह पर चलने वालों को कोई

झुका नहीं सकता।

हकीकत तो यह है कि इंटरनेट की केबल काटना ईरान के लिए बाएं हाथ का खेल है और अगर चार हफ्ते तक पूरी दुनिया का डिजिटल सिस्टम ठप हो गया तो अमरीका के सरकारी बॉन्ड खरीदने वाला कोई नहीं बचेगा और उनकी सुपरपावर वाली हेकड़ी हमेशा के लिए इतिहास के कूड़ेदान में दफन हो जाएगी।

मोदी के परम मित्र ट्रंप की इस शर्मनाक हार ने दुनिया को बता दिया कि केवल ऊंची आवाज में चिल्लाने और जुमलेबाजी करने से जंग नहीं जीती जाती बल्कि इसके लिए नैतिक साहस की जरूरत होती है जो आज के इन तथाकथित दक्षिणपंथी नेताओं के पास रत्ती भर भी मौजूद नहीं है।

-ईरान का बेमिसाल रूहानी सन्न

-इंटरनेट केबल्स पर मंडराता खतरा

-दस ट्रिलियन का डूबता वैश्विक व्यापार

-पश्चिमी मुल्कों की ऐतिहासिक बर्बादी

-ट्रंप की डिप्लोमेसी का करारा जनाजा

जो लोग आज भी अमरीका के खौफ में जी रहे हैं उन्हें ईरान से सबक लेना चाहिए जिसने अपनी रिफाइनरियों और बिजली केंद्रों पर हमले झेलने के बाद भी नागरिकों पर हमला नहीं किया क्योंकि असली योद्धा वही है जो बेगुनाहों के खून से अपने हाथ नहीं रंगता और मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि रखता है।

कांग्रेस की वह महान रवायत ही थी जिसने हमेशा मजलूमों और न्याय का साथ दिया जबकि आज की अंधभक्त हुकूमत केवल इन ग्लोबल जालिमों की गोदी में बैठकर खिलखिलाने और मुल्क की संप्रभुता को तबाही की गहरी खाई में धकेलने को ही अपनी सबसे बड़ी कूटनीतिक जीत मानकर जश्न मना रही है।

अंत में यही कहूंगा कि ईरान ने जो सन्न दिखाया है वह उसकी कमजोरी नहीं बल्कि उसकी आला दर्जे की शराफत है लेकिन जब यह सन्न का बांध टूटेगा तो कयामत के उस खौफनाक मंजर को संभालने के लिए न ट्रंप का खोखला अहंकार बचेगा और न ही उनके ये पालतू खूंखार सिपाही।

यह लेख अंतरराष्ट्रीय युद्ध अपराधों और वैश्विक कूटनीति के गिरते स्तर का एक कठोर व्यंग्यात्मक विश्लेषण है जिसका उद्देश्य उन शक्तियों को बेनकाब करना है जो शांति के नाम पर पूरी दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध की विनाशकारी आग में झोंकने पर उतारू हैं।

दावत-नामा

मेव सोशयल वेलफेयर सोसायटी मन्दसौर

24 वॉ इज्तिमाई शादी सम्मेलन

जश्न शादी

मोहतरम जनाब,

अरस्सलामो अलैयकुम

अल्लाह तआला के फजलो करम से हर साल के मुताबिक़ इस साल भी मेव सोशयल वेलफेयर सोसायटी की जानिब से 24 वॉ इज्तिमाई शादी सम्मेलन मुनअकिद किया जा रहा है। आप हज़रात से गुजारिश है कि इस खुशी के मौके पर ज़रूर तशरीफ लायें, आपकी तशरीफ आवरी बाईसे मसररत होगी।

12 अप्रैल 2026, इतवार

प्रोग्राम

- कुआन ख्वानी - बाद नमाज़े फ़जर
- बारात आमद - सुबह 8 बजे
- दावते तुआम - सुबह 9 बजे
- मेहमाने खुसुसी का इस्तकबाल
- व क़ौम को खिताब - सुबह 11 बजे
- निकाह ख्वानी - सुबह 11 बजे
- बारात बिदायगी - बाद नमाज़े ज़ोहर

मुकाम- ज़ैब शाह वली दरगाह, महु-नीमच रोड़
सोनगरी, मन्दसौर (म.प्र.)

:: मिन जानिब ::

मेव सोशयल वेलफेयर सोसायटी मन्दसौर

जमीअत उलामा गुरुग्राम की इंसानियत नवाज़ी: ईरान कल्चर सेंटर को सौंपी गई राहत राशि : मुफ्ती सलीम कासमी



मुहम्मद मुबारक मेवाती/मेव टाइम्स पलवल मेवात। इंसानियत की सेवा और पीड़ित लोगों के साथ एकजुटता जताने के जज़्बे के तहत जमीयत उलेमा गुरुग्राम ने एक सराहनीय कदम उठाते हुए प्रभावित लोगों की सहायता के लिए आर्थिक सहयोग पेश किया। इस सिलसिले में संगठन के जिम्मेदारों ने 'ईरान कल्चर सेंटर, तिलक मार्ग' को एक राहत राशि सौंपी, ताकि जरूरतमंद

और प्रभावित लोगों की समय पर मदद की जा सके। इस मौके पर जमीयत उलेमा गुरुग्राम के अध्यक्ष मोहम्मद सलीम कासमी ने अपने बयान में कहा कि इस्लाम हमें इंसानियत की सेवा, भाईचारे और मुसीबत में घिरे लोगों के साथ खड़े होने की शिक्षा देता है। उन्होंने कहा कि आज के कठिन हालात में सबसे बड़ी जरूरत यही है कि हम एक-दूसरे का सहारा बनें और अपने संसाधनों के

अनुसार प्रभावित लोगों की मदद करें। उन्होंने आगे कहा, 'हमने यह राहत राशि केवल आर्थिक सहायता के रूप में नहीं, बल्कि एक संदेश के तौर पर दी है कि प्रभावित लोग खुद को अकेला न समझें। हम उनके साथ हैं और हर मुश्किल घड़ी में उनका साथ देते रहेंगे। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि अमन, भाईचारा और इंसानियत की रक्षा के लिए सामूहिक प्रयास समय की सबसे बड़ी जरूरत है। मोहम्मद सलीम कासमी ने कहा कि जमीयत उलेमा गुरुग्राम हमेशा से सामाजिक और जनकल्याण के कार्यों में अग्रणी रही है और आगे भी इसी भावना के साथ सेवा का सिलसिला जारी रखा जाएगा। उन्होंने सभी नेकदिल लोगों से अपील की कि वे भी आगे बढ़कर इस नेक काम में हिस्सा लें और ज्यादा से ज्यादा जरूरतमंदों की मदद करने की कोशिश करें। अंत में उन्होंने प्रभावित लोगों की सुरक्षा, शांति और जल्द सामान्य जीवन की बहाली के लिए दुआ करते हुए कहा कि अल्लाह तआला सबको अपनी हिफाज़त में रखे और दुनिया भर में अमन व सुकून अता फरमाए।

महाराष्ट्र में मेवाती बिरादरी की सामूहिक शादियां

राज्य Maharashtra के विभिन्न जिलों जैसे Aurangabad, Jalna, Jalgaon, Malegaon और Bhiwandi में मेव (मेवाती) बिरादरी के कई गांव आबाद हैं।

अल्लाह के फज़ूल व करम से पिछले कई सालों से इन इलाकों में, जहां मेवाती बिरादरी की आबादी ज्यादा है, सामूहिक शादी का मुबारक निज़ाम कायम है, जिसके तहत हर साल बड़ी तादाद में लड़कियों की शादियां सादगी और इस्लामी तरीके पर अंजाम दी जाती हैं।

इसी सिलसिले को जारी रखते हुए साल 2026 के अप्रैल महीने में भी विभिन्न स्थानों पर सामूहिक शादियों का आयोजन किया जा रहा है, जिनकी जानकारी निम्नलिखित है:

- 5 अप्रैल 2026 :** डोंगरगांव, तहसील सिल्लोड़, जिला औरंगाबाद
- 9 अप्रैल 2026 :** नानेगांव, तहसील सिल्लोड़, जिला औरंगाबाद
- 12 अप्रैल 2026 :** कठोरा बाजार, तहसील भोकरदन, जिला जालना
- 14 अप्रैल 2026 :** कुंज खेड़ा, तहसील कन्नड़, जिला औरंगाबाद
- 19 अप्रैल 2026 :** बाड़ी

(बिस्मिल्लाह गांव), तहसील फुलंबरी, जिला औरंगाबाद

23 अप्रैल 2026 : माहोली, तहसील जिला औरंगाबाद

अल्लहुदिल्लालह! ये तमाम शादियां सिर्फ गांव वालों की सामूहिक कोशिशों से अंजाम दी जाती हैं। इसमें बाहर से किसी भी तरह का कोई चंदा नहीं लिया जाता। जिन लोगों की बेटियों की शादी होती है, उन्हीं से निर्धारित रकम ली जाती है।

इस कार्यक्रम में किसी भी तरह की कोई संस्था शामिल नहीं होती। अगर कोई संस्था इसका श्रेय (क्रेडिट) लेने की कोशिश करती है, तो वह बिल्कुल गलत है। न कोई जमीयत, न कोई जमात और न ही कोई मेव महासभा के बैनर के तहत ये कार्यक्रम होते हैं।

हर गांव में एक अलग कमेटी होती है, जो अपने गांव की सामूहिक शादियों का पूरा इंतज़ाम करती है।

अल्लाह तआला इन तमाम कोशिशों को कबूल फरमाए, निकाहों में बरकत अता करे और इस नेक काम को और ज्यादा आम करे। आमीन।

एक छोटे से गाँव टायड़ा से उठी बड़ी कहानी-इंशा खान



और आखिरकार छठी बार में 678वीं रैंक के साथ UPSC में चयन।

यह सिर्फ एक चयन नहीं यह उस माँ की मेहनत की जीत है, जिसने चक्की चलाई।

यह उस पिता की इज्ज़त की जीत है, जिसने दूध बेचकर बच्चों को पढ़ाया।

परिवार में नौ भाई-बहनों के बीच पले इंशा के बड़े भाई CA मुख्त्यार अहमद—जो कामाँ

टायड़ा (तहसील कामाँ, जिला डीग) की उस साधारण सी मिट्टी में एक ऐसा सपना पल रहा था, जिसे हालात रोक नहीं पाए।

नाम है इंशा खान उम्र 30 वर्ष लेकिन हौसला उम्र से कहीं बड़ा।

उनके पिता हाजी उस्मान-दिन-रात मेहनत कर दूध का काम करते रहे।

माँ—चक्की चलाकर आटा पीसती रहीं।

ना कोई बड़ी दौलत, ना ऊँचे साधन लेकिन एक चीज़ थी—हलाल की कमाई और बच्चों को पढ़ाने का जज़्बा।

इंशा ने अपनी शुरुआती पढ़ाई कामाँ से की, फिर अरावली पब्लिक स्कूल, फिरोजपुर झिरका (मेवात) से उच्च माध्यमिक पूरी की।

इसके बाद NIT कुरुक्षेत्र से B.Tech किया—जहाँ से उन्हें कैपस प्लेसमेंट मिला।

ज़िंदगी यहाँ आसान हो सकती था अच्छी नौकरी, सुकून की राह

लेकिन इंशा ने एक अलग रास्ता चुना—UPSC का रास्ता।

उन्होंने नौकरी छोड़ी संघर्ष चुना और फिर शुरू हुआ एक लंबा सफर एक बार नहीं दो बार नहीं पाँच बार असफलता।

लेकिन हर असफलता ने उन्हें और मज़बूत बनाया।

विधानसभा से निर्दलीय चुनाव लड़कर उपविजेता रहे—हमेशा प्रेरणा बने।

आज उनके परिवार में दो बहनें हैं डॉक्टर हैं, एक भतीजा भी हैं की पढ़ाई कर रहा है— यानी यह घर अब शिक्षा की मिसाल बन चुका है।

लेकिन इंशा की सोच सिर्फ अपनी सफलता तक सीमित नहीं है

उनका कहना है—

‘अगर कामाँ से मेरे जैसे दर्जनों बच्चे छड़एण में चयनित होते हैं, तब मैं खुद को सफल मानूँगा और इसमें जो भी मदद कर सकूँगा, इंशाअल्लाह पूरी नीयत से करूँगा।’

मेव समाज के बच्चों के लिए उनका संदेश दिल को छू लेने वाला है—

‘हमारे इलाके को जिस तरह ठगी के लिए जाना जाता है, अब उसे बदलना होगा हम चाहते हैं कि मेवात का नाम बेहतरीन शिक्षा के लिए लिया जाए जहाँ शिक्षा की बात हो, वहाँ हमारे क्षेत्र का नाम भी गर्व से आए।’

यह कहानी सिर्फ इंशा खान की नहीं यह हर उस घर की कहानी है जहाँ हालात छोटे हैं लेकिन सपने बड़े।

अगर नीयत साफ हो, मेहनत सच्ची हो और हौसला मजबूत हो

तो टायड़ा जैसे छोटे गाँव से भी छड़एण तक का सफर तय किया जा सकता है।

ऐलान बराए दाखला 1447 हि. 2026 ई.

मदरसा हज़रत उस्मान बिन अफ़फान रज़ी. व मदरसा हज़रत खदीजतुल कूबरा लील बनात रज़ी. रीधोर

खुसूसियात

- * दिनी व दुनीयवी तालीम * तालीम के साथ बेहतर तर्बियतम * पानी के लिए फ़िल्टर मशीन
- * तलबा व तालीबात का फ्री इलाज * सर्दी मे गरम पानी का नज़म * तीन टाइम बेहतरीन खाना
- * कपड़ों के लिए वाशिंग मशीन * सेहत के लिए खेल/वर्जिश * बच्चों का हफ़्तावारी जलसा
- * बच्चों की अंजुमन के प्रोग्राम * बड़ी बच्चियों के लिए माहिर मुअल्लिमा के जरिए तालीम
- * मकामी तलबा को रोज़ लाने ले जाने की इजाज़त

तालीमी शोबे

शोबाए नाज़िरा - शोबाए दिनियात - मोमीना कोर्स - दाईया कोर्स - वेकेशन कोर्स

मदरसे मे 1 अप्रैल 2026 से दाखले शुरू हो जाएंगे, इंशाअल्लाह

मदरसे के फ़ियाम का मक़सद ही यह है कि उम्मत के लिए दर्दमंद व फ़िक्रमंद अफ़राद तैयार किए जाएं जो हर फ़िस्म के हालात का डट कर मुकाबला कर सकें और अपने इलाकों में दीनी ख़िदमात अंजाम दे सकें, इसी लिए अपने नौनिहालों को दीनी व दुनियवी तालीम से आरास्ता करने के लिए जल्द अज़ जल्द मदरसे में दाख़िल कराएं।

दाखलों के लिए राबता करें

मौलाना मुहम्मद अली खान, रीधोरा 9699824026	मौलाना इशतियाक पटेल इशाअती 8378808473	हाफ़िज़ नाज़िम 8007807962
--	--	------------------------------

इस्लामिक देश वास्तव में कितने इस्लामिक हैं

जॉर्ज वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर हुसैन असकरी ने एक शोध किया कि इस्लामिक देश वास्तव में कितने इस्लामिक हैं।

जब उन्होंने यह जांचना चाहा कि कौन-से देश इस्लाम के राज्य और सामाजिक नियमों का पालन करते हैं, तो पता चला कि जो देश अपने दैनिक जीवन में इस्लामिक उसूलों का पालन करते हैं — वे असल में मुसलमान देश नहीं हैं।

अध्ययन में यह सामने आया कि दुनिया में सबसे अधिक इस्लामी सिद्धांतों का पालन न्यूज़ीलैंड करता है।

इसके बाद लक्समबर्ग, आयरलैंड, आइसलैंड, फिनलैंड, डेनमार्क और सातवें नंबर पर कनाडा आता है।

जबकि मलेशिया 38वें, कुवैत 48वें और बहरीन 64वें स्थान पर हैं, और चौकाने वाली बात यह है कि सऊदी अरब 131वें स्थान पर है, यहां तक कि बांग्लादेश भी सऊदी अरब से नीचे आता है।

इस शोध को ग्लोबल इकॉनॉमी जर्नल में प्रकाशित किया गया था।

शोध में यह स्पष्ट हुआ कि मुस्लिम लोग नमाज़, रोज़ा, सुन्नत, कुरान, हदीस, हिजाब, दाढ़ी और पहनावे पर बहुत ध्यान देते हैं, मगर राज्य, सामाजिक और व्यापारिक जीवन में इस्लाम के नियमों का पालन नहीं करते।

मुस्लिम दुनिया में सबसे अधिक धार्मिक भाषण, वाअज़ और नसीहतें सुनी जाती हैं, परंतु आज तक कोई भी मुस्लिम देश दुनिया का श्रेष्ठ देश नहीं बन पाया।

एक साधारण गणना के अनुसार, मुसलमानों ने पिछले 60 वर्षों

में लगभग 3000 जुमे के खुतबे सुने हैं, लेकिन फिर भी सामाजिक व्यवस्था और इन्साफ में पिछड़े हुए हैं।

एक चीनी व्यापारी ने एक बार कहा:

‘मुस्लिम व्यापारी हमारे पास आकर दो नंबर की नकल की हुई चीजें बनाने का ऑर्डर देते हैं और कहते हैं कि उस पर मशहूर कंपनी का लेबल चिपका दो।

लेकिन जब हम उन्हें खाना ऑफर करते हैं, तो वे कहते हैं — ‘यह हलाल नहीं है, मैं नहीं खाऊंगा।’

तो सवाल ये है: क्या नकली चीजें बनाना हलाल है?’

एक जापानी नया मुस्लिम कहता है:

‘मैंने पश्चिमी देशों में गैर-मुस्लिमों को इस्लामिक नियमों का पालन करते देखा है,

और पूर्वी देशों में इस्लाम देखा है, मगर मुसलमान नहीं देखे।

अल्हम्दुलिल्लाह, इस फर्क को पहचानकर मैंने पहले ही इस्लाम अपना लिया है।’

इस्लाम सिर्फ नमाज़ और रोज़ा का नाम नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की संपूर्ण प्रणाली है, जो हमारे आपसी व्यवहार, समाज, कारोबार और इन्साफ में भी झलकनी चाहिए।

कोई व्यक्ति जल्दी-जल्दी नमाज़ पढ़ता है और उसके साथे पर निशान है, तो यह जरूरी नहीं कि वह अल्लाह की नजर में नेक हो — वह दिखावा भी हो सकता है।

रसूलुल्लाह ने फरमाया:

‘असल मुफलिस लोग वो होंगे जो क्रियामत के दिन रोज़ा, नमाज़, हज और दान के साथ आएंगे, मगर उन्होंने दूसरों पर

जुल्म किया होगा, किसी की इज़्जत पर हमला किया होगा, किसी की दौलत हड़पी होगी, तो उनके सारे नेक अमल दूसरों को दे दिए जाएंगे, और अंत में जब कुछ न बचेगा, तो दूसरों के गुनाह इनके ऊपर लादकर इन्हें जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।’

इस्लाम दो हिस्सों में है:

1. एक है-‘ईमान’, यानी जुबान से कलमा कहना।

2. और दूसरा है-‘एहसान’, यानी व्यवहार, आचरण और सामाजिक ज़िम्मेदारियों का पालन।

जब तक दोनों को साथ नहीं निभाया जाएगा, इस्लाम अधूरा रहेगा।

और यही अधूरापन आज हर मुस्लिम देश में देखा जा रहा है।

व्यक्तिगत इबादतें — जैसे रोज़ा, नमाज़ — अल्लाह और बंदे के बीच का मामला हैं, मगर सामाजिक न्याय, हक अदा करना, बेईमानी से बचना — यह समाज के साथ इन्साफ का मामला है।

अगर मुसलमान अपने व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक व्यवहार में इस्लामी उसूलों का पालन नहीं करेंगे, तो मुस्लिम समाज भ्रष्ट हो जाएगा, और भविष्य अपमानजनक होगा।

लॉर्ड बर्नार्ड शॉ ने एक बार कहा था:

‘इस्लाम सबसे अच्छा धर्म है, और मुसलमान सबसे बुरे अनुयायी।’

अल्लाह हमें इस्लाम को केवल पहचानने वाला नहीं, बल्कि उस पर अमल करने वाला सच्चा मुसलमान बनाए-आमीन।

माँ के इलाज के लिए 12 साल के बच्चे ने छोड़ दी पढ़ाई, एक इसी कहानी जो आपको रुला देगी !

मुंबई/महाराष्ट्र। यह दिल दहला देने वाली कहानी है, जहां एक 12 साल का मासूम बच्चा परवेज अली अपनी बीमार मां शबाना की जान बचाने के लिए दिन-रात अस्पताल के बाहर गुहार लगा रहा है। अपनी पढ़ाई माँ के इलाज के वजह से छोड़ दी !!

उत्तर प्रदेश के फैजाबाद से मुंबई तक का सफर, पिता और रिश्तेदारों द्वारा छोड़ दिए जाने के बाद, यह छोटा सा बच्चा अपनी नानी के साथ एंटॉप हिल में रहते हुए मां का सहारा बना हुआ है।

शबाना को दो साल पहले खिं अस्पताल में कोलोस्टोमी का ऑपरेशन हुआ था। परवेज का आरोप है कि उसके बाद अस्पताल ने इलाज जारी रखने से मना कर दिया क्योंकि परिवार भुगतान नहीं कर पा रहा था और स्टाफ की कमी बताई गई। उन्हें डिस्चार्ज अगैस्ट मेडिकल एडवाइस पर साइन करवाकर छोड़ दिया गया, जब शबाना की हालत बहुत नाजुक थी (अंग बैग में बाहर)। अब वे सियोन अस्पताल (Lokmanya Tilak Municipal General Hospital) में हैं, जहां डॉक्टरों ने बताया है कि रेक्टोयूरेथ्रल और रेक्टोवेजाइनल फिस्टुला जैसी जटिल समस्या के लिए सर्जरी जरूरी है, जिसकी अनुमानित लागत कम से कम 2.6 लाख रुपये है।

परवेज ने स्कूल छोड़ दिया है। उसकी पढ़ाई चौथी कक्षा में अटक गई है। दिन भर अस्पताल के बाहर लोगों से मदद मांगता है, क्योंकि उसका इकलौता सहारा मां है। शबाना कहती हैं कि यह बच्चा फैजाबाद से मुंबई तक का सफर कैसे तय किया, अस्पतालों की जानकारी कैसे जुटाई—यह सब देखकर वे हैरान हैं।

यह मामला मुंबई के mid-day अखबार में प्रमुखता से छपा है। रिपोर्ट के बाद मुंबईकरों ने दिल खोलकर मदद की—एक दिन में ही 61,000 रुपये से ज्यादा जुट गए। परवेज ने कहा कि ये पैसे परिवार के बोझ को कम कर रहे हैं, लेकिन अभी भी पूरी राशि की जरूरत है।

यह भारत की वह हकीकत दिखाता है जहां गरीबी और बीमारी मिलकर परिवारों को तोड़ देती है, लेकिन एक बच्चे की हिम्मत और समाज की संवेदना उम्मीद की किरण बन जाती है। अगर आप मदद करना चाहें तो mid-day की रिपोर्ट में दिए गए QR कोड या अस्पताल के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं। बाद में बहुत सारे अखबार ने यह कहानी छपी है !

परवेज जैसे बच्चे हमें याद दिलाते हैं—इंसानियत अभी बाकी है। दुआ है कि शबाना जल्द ठीक हों और परवेज को उसकी मासूम उम्र वापस मिले।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

औरंगाबाद। बेहद दुख और गहरे अफसोस के साथ यह दिल दहला देने वाली खबर प्राप्त हुई कि दिनांक 22 मार्च 2026, ब रविवार, शाम लगभग 5 बजे करंट लगने के दर्दनाक हादसे में इलाका मेवात (महाराष्ट्र) के

मशहूर व सम्मानित आलिमे दीन मौलाना मुहम्मद अली खान साहब (पूर्व केंद्रीय सहायक, इदारा-ए-दीनियात मुंबई) व जिम्मेदार मदरसा हज़रत खदीजतुल कुबरा लिल बनात, रिधोरा, ज़िला औरंगाबाद के नौजवान, नेक, खुशअखलाक और उम्मीदों से भरे फरज़ंद मौलाना मुहम्मद अबूबकर खान साहब (B.Sc Agri) इस फानी दुनिया से रुख़्सत हो गए।

मरहूम ने दीन के साथ-साथ दुनियावी तालीम में भी शानदार कामयाबी हासिल की और B.Sc एग्रीकल्चर की डिग्री मुकम्मल की थी। आप बहुत ही खुशमिजाज, मिलनसार और रोशन मुस्तकबिल रखने वाले नौजवान थे, जिनसे कौम को बड़ी उम्मीदें थीं।

यह भी अत्यंत दुखद है कि मरहूम की शादी आने वाली 9 अप्रैल 2026 को तय थी, लेकिन अल्लाह को कुछ और ही मंजूर था। इस तरह खुशियों का माहौल अचानक गुम में बदल गया।

अल्लाह तआला मरहूम की मग़फ़िरत फरमाए, उनकी कमियों को माफ करे, उन्हें जन्नतुल फिरदौस में आला मकाम अता फरमाए, और उनके घरवालों को सब्र-ए-जमील अता फरमाए।

नमाज कायम करें जकात देते रहें



पिता की याद में मजदूरों को टी-शर्ट, शाल वितरित किए गए

शामगढ़। वार्ड 15 पार्षद फारुख मेव द्वारा उनके पिताजी स्वर्गीय फ़रीद मेव साहब की प्रथम पुण्यतिथि पर कृषि उपज मंडी में मजदूरी करने वाले मजदूरों को टी-शर्ट, शाल एवं पानी की बॉटले वितरित की गई

शामगढ़-वार्ड 15 के पार्षद फारुख मेव द्वारा उनके पिताजी स्वर्गीय फ़रीद मेव साहब की प्रथम पुण्यतिथि पर कृषि उपज मंडी में एक छोटा सा आयोजन किया गया जिसमें मंडी में मजदूरी करने

वाले मजदूरों को टी-शर्ट, शाल एवं पानी की बॉटले वितरित की गई, इस अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि श्री नरेंद्र कुमार यादव, अध्यक्ष व्यापारी संघ श्री रमेश काला, सचिव कृषि उपज मंडी पर्वत सिंह यादव, व्यापारी श्री गोपाल एसआर, व्यापारी श्री मांगीलाल उदिया, पंडित श्री प्रकाश जोशी मंचासीन रहे कार्यक्रम के उपस्थित सभी अतिथियों एवं समस्त मजदूरों का आभार पार्षद फारुख मेव द्वारा माना गया।

शादियां ही शादियां

भोपाल. जनाब हबीब खान साहब कि दुख्तर शबा खान कि शादी दिल्ली के जनाब अब्बास अली साहब के फरज़ंद मो. सलमान खान के साथ संपन्न हुई.

मक्सी। मेव समाज के निसार खान मेव के फरज़ंद डॉ. जफर (बबं न) की शादी, ताल के हाजी सत्तार खा मेव की दुख्तर आसीफा के साथ, और हाजी अब्बास साहब के फरज़ंद शाहरुख मेव की शादी कंटफोड के अज़ीज़ खा मेव की दुख्तर नोरीन मेव के साथ संपन्न हुई.

इनायतपुर. मेव समाज के हाजी इकबाल पटेल के पोते एवं अफजल खान के फरज़ंद आरिज़ खान की शादी खोयरा के मो. साबीर खान मेव की दुख्तर फिरदोष खान के साथ संपन्न हुई.

तराना. मेव समाज के जनाब सईद मेव के फरज़ंद सरफराज मेव की शादी अख्तर मेव (रामगंज मंडी) की दुख्तर सबनूर मेव के साथ आगामी 5, अप्रिल को होने जा रही है.

न्यू मेव टाईम परिवार सभी दुल्हा दुल्हन को अपनी मुबारक बाद पेश करता है



मीर पब्लिक स्कूल, सतवाड़ी (पहाड़ी) में भव्य दावत-ए-रोज़ा इफ्तार एवं सम्मान समारोह आयोजित

कामा। पिछले दिनों कांग्रेस नेता CA मुख्तियार अहमद द्वारा मीर पब्लिक स्कूल, सातवाड़ी (पहाड़ी) में पवित्र रमज़ान माह के अवसर पर दावत-ए-रोज़ा इफ्तार का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर उनके छोटे भाई इंशा खान के प्रतिष्ठित यूपीएससी में चयन होने पर स्वागत एवं सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भरतपुर सांसद संजना जाटव सहित कई गणमान्य जनप्रतिनिधियों एवं वरिष्ठ कांग्रेस

नेताओं की गरिमामयी उपस्थिति रही। उपस्थित प्रमुख अतिथियों में कांग्रेस नेता महताब अहमद (नूंह), कांग्रेस जिलाध्यक्ष राजीव कुमार सिंह, पूर्व मंत्री चौधरी आज़ाद मोहम्मद, पूर्व विधायक कामाँ समशूल हसन, पूर्व प्रधान कामाँ कमलेश जाटव, पूर्व कांग्रेस प्रत्याशी डॉ. समशुद्दीन शम्स (तावड़ू), कांग्रेस प्रत्याशी इमरान खान (तिजारा), सदर शेर मोहम्मद, मेवात विकास सभा के अध्यक्ष फकरू चैयरेमैन, पूर्व अध्यक्ष उमर पाड़ला तथा सलामुद्दीन नोटकी सहित मेवात क्षेत्र के सैकड़ों सरपंच एवं जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

सभी अतिथियों ने इंशा खान को यूपीएससी में चयनित होने पर शुभकामनाएँ दीं और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम के अंत में सभी ने मिलकर रोज़ा इफ्तार किया और आपसी भाईचारे, सौहार्द एवं एकता का संदेश दिया।

CA मुख्तियार अहमद ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज की प्रगति शिक्षा और आपसी सहयोग से ही संभव है, और इस प्रकार के आयोजन सामाजिक एकता को और अधिक मजबूत करते हैं। **-मूर सलीन द्वारा**

जब एक लड़की शिक्षित होती है, तो पूरा समुदाय आगे बढ़ता है

अलवर। पिछले 25 वर्षों से, AMIED (अलवर मेवात इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट) ग्रामीण राजस्थान में कार्य कर रहा है ताकि वंचित समुदायों की लड़कियाँ शिक्षा से पीछे न रह जाएँ।

हमारे समुदाय और शुभचिंतकों के सहयोग से अब तक 18,000 से अधिक ग्रामीण और अल्पसंख्यक पृथ्वी की लड़कियाँ, जिनमें एण, एऊ और OBC समुदाय भी शामिल हैं, अपनी शिक्षा जारी रख सकी हैं।

इनमें से कई लड़कियों ने 10वीं और 12वीं की शिक्षा सफलतापूर्वक पूरी की है, जबकि अन्य ने स्नातक, नर्सिंग, इंजीनियरिंग, कानून (LLB), डिप्लोमा, शिक्षण तथा विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अपनी पढ़ाई पूरी की है।

साथ ही, कई अन्य लड़कियाँ वर्तमान में भी इन क्षेत्रों में अध्ययन कर रही हैं और स्वावलंबी तथा सशक्त भविष्य बनाने की दिशा में प्रयासरत हैं।

आज 1,000 से अधिक लड़कियाँ हमारे सहयोग से अपनी शिक्षा जारी रखे हुए हैं और सामाजिक व आर्थिक बाधाओं को पार करते

हुए अपने सपनों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

छात्रवृत्ति, डिजिटल संसाधनों तक पहुँच, मेंटरशिप और लैपटॉप वितरण जैसी पहलों के माध्यम से हम उन लड़कियों के लिए समान शैक्षिक अवसर बनाने का प्रयास कर रहे हैं जो सीखने, आगे बढ़ने और नेतृत्व करने का अवसर पाने की हकदार हैं। यह पहल हमारे शिक्षा सहायता कोष (Education Support Fund) को सशक्त बनाने का उद्देश्य रखती है, ताकि और अधिक लड़कियाँ स्कूल में बनी रहें और उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें।

आपका सहयोग कई और लड़कियों के लिए शिक्षा के द्वार खोल सकता है। पिछले दिनों संस्था के नूर मोहम्मद साहब और अध्यक्ष श्री मानवी जी के भरसक प्रयास से करीब 12 बच्चियों को लैपटॉप जनसहयोग से वितरित किए गए, जिससे उन्हें आगे की पढ़ाई में सहयोग मिले।

सहयोग करने के लिए पोस्टर में दिए गए कोड को स्कैन करें।

दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अंतर्गत कर छूट के लिए पात्र है।



आपका सहयोग

“मेवात बालिका शिक्षा कोष” के

निर्माण में हमारी मदद कर सकता है

ग्रामीण राजस्थान में कई लड़कियाँ शिक्षा जारी रखने में अनेक बाधाओं का सामना करती हैं। आपका सहयोग उन्हें स्कूल में बने रहने और एक उज्ज्वल भविष्य बनाने में मदद कर सकता है।

आपका सहयोग इन कार्यों को समर्थन देता है:

- ड्राइंग हाउस बालिकाओं को पुनः शिक्षा से जोड़ना
- लड़कियों की उच्च शिक्षा और करियर की तैयारी में सहयोग
- UPSC / RPSC जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन कोचिंग में सहयोग
- मेवात संदर्भ एवं परामर्श केंद्र की स्थापना और संचालन
- लड़कियों के लिए सुरक्षित छात्रावास (होस्टल) की व्यवस्था



For Donation
Scan the QR

सांसद संजना जाटव ने रेल की मांग की

भरतपुर सांसद संजना जाटव ने संसद में कामाँ रेल लाइन की पुरानी मांग को जोरदार तरीके से उठाया है। कामाँ क्षेत्र लंबे समय से रेल कनेक्टिविटी से वंचित है, जबकि इसके पड़ोसी क्षेत्र कोसी और डींग पहले से ही रेल लाइन से जुड़े हुए हैं। ऐसे में कामाँ-कोसी-डींग-भरतपुर को जोड़ने की योजना क्षेत्र के विकास के लिए अहम मानी जा रही है। गौरतलब है कि हाल ही में



मानवाधिकार कार्यकर्ता इंजीनियर वसीम अकरम मेव ने भी सोशल मीडिया के माध्यम से Ai से वीडियो बनाकर इस मुद्दे को उठाया था, जिसके बाद अब यह मांग संसद तक पहुंच गई है। अगर यह परियोजना मंजूर होती है, तो क्षेत्र में यातायात, व्यापार और रोजगार के नए अवसर खुल सकते हैं। अब देखना होगा कि सरकार इस पुरानी मांग पर कब तक फ़ैसला लेती है।

कौम को झकझोर देने वाला लेख

‘पेट पूजा या शिक्षा’

कभी किसी मोहल्ले में निकल कर देखिए

धुएँ से भरी गलियों में, हर कोने पर बिरयानी के ठेले, चिकन फ्राई, कबाब, कीम की कचौरी और चाय की दुकानों की कतारें हैं।

हर चेहरा मेहनतकश है, लेकिन सोच का दायरा सीमित है — ‘बस पेट भर जाए, ज़िंदगी कट जाए।’

लेकिन ज़रा उधर देखिए, दूसरे मोहल्लों में —

वहाँ स्कूल खुल रहे हैं, कॉलेज बन रहे हैं, ट्यूशन सेंटर, लाइब्रेरी और कोचिंग इंस्टिट्यूट्स रोज़ बढ़ रहे हैं।

वहाँ बच्चे मोबाइल नहीं, मॉडल पेपर पकड़ते हैं।

वहाँ लड़के क्रिकेट नहीं, कॉम्पिटिशन एक्ज़ाम्स की तैयारी करते हैं।

वहाँ रोटियाँ सिंकती नहीं, सोच पकती है!

यही फर्क है — सोच का, नज़रिये का और तरक्की का।

जिस कौम ने शिक्षा छोड़कर पेट पूजा को ज़िंदगी का मक़सद बना लिया —

वह कौम कभी उठ नहीं सकती।

जिस कौम के बच्चे शायरियों, मुशायरों, टाइटल-पठान के दीवाने हों, वह कौम सिर्फ़ ताली बजाती रह जाएगी- जबकि दूसरे बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर, अफ़सर बनकर हुकूमत करेंगे।

आज सच्चाई कड़वी है—

हमारे ठेले चल रहे हैं, उनकी

यूनिवर्सिटियाँ चल रही हैं।

हमारा ध्यान खाने पर है, उनका ध्यान कमाने और बनाने पर।

हम सिर्फ़ रोज़ी तलाश रहे हैं, वो रोज़गार देने वाले बन चुके हैं।

यही ग़लती ...

आज जब बनिया और मारवाड़ी सादा खाना खाकर मालिकाना सोच से देश चला रहे हैं, हमारी कौम कबाब और बिरयानी में उलझी हुई है, और फिर रोती है कि ‘हमें दबा दिया गया।’

सवाल यह नहीं कि हमें दबाया गया, सवाल यह है-हम उठना चाहते भी हैं या नहीं

क्योंकि याद रखिए —

‘जिस कौम ने इल्म छोड़ा, उसे दुनिया ने भी छोड़ दिया।’

‘शिक्षा सबसे बड़ा हथियार है — और जो इसके बिना है, वो हमेशा निशाना रहेगा।’

अब वक्त है ठेले से किताब तक का सफ़र तय करने का

अब वक्त है पेट नहीं, दिमाग़ भरने का।

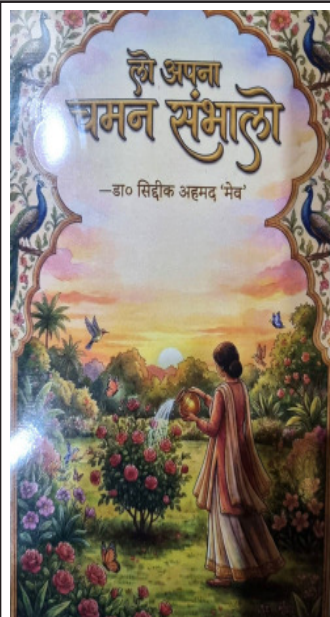
अब वक्त है मुशायरे नहीं, मिशन की ज़रूरत का।

कौम अगर अब भी नहीं जागी तो आने वाली नस्लें हमें माफ़ नहीं करेंगी।

जो लोग कौम की शिक्षा का स्तर सुधारने में लगे हैं उनका हाथ थामो।

सौ.- भारतीय मुस्लिम स्व

सहायता समूह रतलाम



डॉ. सिद्दीक अहमद 'मेव'

परिचय

श्री सिद्दीक अहमद मेव का जन्म १० अप्रैल, १९६१ को हरियाणा राज्य के मेवात क्षेत्र के गाँव बनारसी में, जिला नूह, तह. फिरोज़पुर बिरका में हुआ था। आजकल आप नूह में रह रहे हैं। आपके पिता श्री अब्दुल अज़ीज़ एक मध्यम श्रेणी के किसान थे तथा माता श्रीमती सुबानी, एक घरेलू स्त्री थी। पिता जी के शिक्षा के प्रति लगाव ने उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाया। पेजे से सिविल इंजीनियर श्री सिद्दीक अहमद मेव इस समय एक स्थापित लेखक तथा जाने-माने समाज सेवक हैं। मेव कौम और मेवात के इतिहास एवं संस्कृति पर आपकी बारह किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। हरियाणा साहित्य अकादमी (१९९९-२०००), हरियाणा दलित साहित्य अकादमी (२००७-०८), हरियाणा ग्रंथ अकादमी (२०१६) तथा जिला प्रशासन गुरुग्राम (१९९७) एवं जिला नूह प्रशासन (२००८) उन्हें सम्मानित कर चुके हैं। आप गद्य व पद्य में समान रूप से लिखते हैं। आपको ग्लोबल प्राइड अवार्ड (२०१६) व मेवात रत्न अवार्ड (२०१८) तथा Best Citizen of India Award (२०२२) से भी नवाजा जा चुका है।



नहीं डरतीं। उनका उद्देश्य यह है कि वे ईरान के विरोधी आतंकवादी, साम्राज्यवादी देशों, खासकर अमेरिका और इज़राइल को यह समझा सकें कि वे कमजोर नहीं हैं, उनका इरादा अपने देश और इस्लाम जैसे लॉजिकल साइंटिफिक विचारों की रक्षा के लिए अडिग है।

इन महिलाओं का संदेश बहुत स्पष्ट है: ‘हम अपनी जान गंवाने से नहीं डरते, हम अपने देश की रक्षा के लिए मरने को तैयार हैं।’ उनका यह साहसिक कदम न केवल ईरान के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक प्रेरणा है। यह

दिखाता है कि जब लोग अपने अधिकारों स्वतंत्रता, की रक्षा के लिए खड़े होते हैं, तो वे किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं।

इस कदम से न केवल ईरान की महिलाओं का संघर्ष उजागर हो रहा है, बल्कि यह दुनिया को यह सिखा रहा है कि जब कोई समाज अपनी स्वतंत्रता के लिए खड़ा होता है, तो उसे कोई भी ताकत नहीं हरा सकती। यह एक स्पष्ट संदेश है कि विरोधी ताकतें और उनकी धमकियाँ इन महिलाओं के अडिग इरादों को कमजोर नहीं कर सकतीं।

श्रद्धांजलि

ए स्टोरी ऑफ़ लीजेंड

मरहूम सलीम खान

विदिशा। मेरे बड़े मामा के सुपुत्र, मेरे बड़े भाई मरहूम सलीम खान साहब, जो अचानक हार्ट अटैक के बहाने हमें ग़मज़दा छोड़ कर इस फ़ानी दुनिया से रुख़सत हो गए। उनका जाना केवल एक व्यक्ति का जाना नहीं था, बल्कि एक पूरे परिवार की रीढ़ का टूट जाना था।

उनके पिता, मेरे मामू हिम्मत के पहाड़, बहादुर शख़्सियत के मालिक अब्दुल रशीद खान साहब, जो पूर्व सरपंच रहे हैं, और उनके दादा मरहूम अब्दुल लतीफ़ खान साहब उर्फ़ काले खान साहब, जो ज़मींदार पटेल रहे तथा डकैती उन्मूलन में शासन द्वारा पुरस्कृत शख़्सियत थे — ऐसे प्रतिति और सम्मानित परिवार से ताल्लुक़ रखने वाले सलीम भाई अपने आप में एक मिसाल थे।

उनका ससुराल पक्ष कुरवाई नगर से है, जो पुलिस सेवा में भी गौरवशाली भूमिका निभाता रहा है।

हौसलों का एक पहाड़ था जो ढह गया अचानक, हम समझते रहे ज़िंदगी है, मगर वो निकल गया अचानक।

सलीम भाई ने बहुत कम उम्र में ही ज़िंदगी के सबसे बड़े ग़म को देख लिया था। बचपन में ही माँ दुनिया छोड़कर चली गईं। इसके बाद दादा के प्यार की छांव में, बड़ी फुफ़फो मेरी माँ जुबैदा बेगम, छोटी फुफ़फो फेहमीदा, चाचा हाजी अब्दुल अज़ीज़, चाचा हामिद खान साहब, फूफा हाजी अय्यूब खान साहब, हाजी कमर साहब — सबके स्नेह, मार्गदर्शन और दुआओं के साए में उन्होंने जीवन की कठिन राहों पर चलना सीखा।

मामियों जमीला बेगम, हज्जानी सईदन और फरीदा बेगम ने माँ की कमी कभी महसूस नहीं होने दी।

आपके ब्रदर इन लॉ हाजी मोहम्मद सलीम खान साहब एडवोकेट, कुरवाई, मेव बिरादरी की एक अज़ीम शख़्सियत हैं — जिनसे उन्हें मार्गदर्शन और प्रेरणा मिलती रही।

जिसने बचपन में ही ग़मों से दोस्ती कर ली, उसी ने हर मुश्किल को अपनी तक़दीर कर ली।

प्रारंभिक शिक्षा हेतु मात्र तीन वर्ष की आयु में शाजापुर आए, फिर अपने आबाई वतन बहादुरपुर, अशोक नगर (पूर्व ज़िला गुना) चले गए।

बिना किसी प्रशिक्षण के उन्होंने घर के ट्रैक्टर को खोलना, जोड़ना सीखा और कब मैकेनिक बन गए, पता ही नहीं चला। धीरे-धीरे उन्होंने पूरे घर के कृषि कार्य का भार अपने कंधों पर ले लिया और परिवार की रीढ़ की हड्डी बन गए।

उनके अचानक जाने से पुरानी यादें आँखें नम कर देती हैं। ऐसा लगता है मानो कोई तूफ़ान आया हो और सब कुछ आँसुओं में बह गया हो। बच्चे हों या बड़े — सबकी आँखों से आँसुओं का बाँध टूट गया।

जो सबका सहारा था वही आज सहारा मांग रहा है,

क़ब्र की खामोशी में भी घर उसे पुकार रहा है।

4 फ़रवरी 2026 की रात बड़ी मुश्किल से बीती और 5 फ़रवरी की सुबह जब उन्हें सुपुर्द-ए-खाक किया गया, तो ऐसा लगा मानो हर एक की ज़िंदगी सूनी हो गई हो। घर, आंगन, गलियाँ — सब खामोश हो गए।

वो दिन रात खोखले ही होते हैं जिनमें भाई की आवाज़ नहीं होती।

वे मेरे बड़े भाई थे। आज भी मुझे बच्चा समझकर पूरे अधिकार के साथ डाँट देते थे और हम उन्हें वही सम्मान देते थे जो एक बड़े भाई को दिया जाता है।

डाँट में भी दुआ थी, उनकी हर बात में साया था, भाई सिर्फ़ रिश्ता नहीं, पूरा खुदा का तोहफ़ा था।

शफीक भाई, नफीस भाई, शाहिद भाई मंत्रीजी, साजिद, माजिद, शानू भाई, आमिर पटेल, आफ़ताब जीजा — सबके लिए वे दोस्त भी थे, रहबर भी और एक जिम्मेदार बड़े भाई भी।

दोस्त भी था, रहबर भी, और पिता का सा प्यारा भी, एक शख्स में कितने रिश्ते थे, ये बात सबसे न्यारा भी।

उनके जाने से ऐसा लगता है मानो आसमान और ज़मीन दोनों रो रहे हों।

ज़मीन खा गई आसमां कैसे-कैसे, हमने खो दिए अपने जहाँ कैसे-कैसे।

हमारी बहन अंजुम से हमारे वालिद के निकाही रिश्ते के कारण दिल से मोहब्बत रही है। आज हमारी बहनें यासमीन और अंजुम भी इस गहरे सदमे से टूट चुकी हैं। यह ग़म सिर्फ़ एक परिवार का नहीं, बल्कि पूरी बिरादरी का है।

दुआ

ऐ अल्लाह! मरहूम सलीम भाई को जन्नतुल फ़िरदौस में आला मक़ाम अता फ़रमा, उनकी मग़फ़िरत फ़रमा, उनकी क़ब्र को रौशन और वसीअ फ़रमा, और हम सबको उनके फ़िराक़ में सब्र-ए-जमील अता फ़रमा।

आमीन या रब्बुल आलमीन।

अपने देश की आजादी कायम रखने युवतियां, महिलाएं मैदान में

ईरान की सड़कों पर कफ़न पहनकर उतरी सुशिक्षित, साइंटिस्ट, डॉक्टर, इंजिनियर, रिसर्च स्कॉलर महिलाएं, अमेरिका और इज़राइल को एक अहम संदेश दे रही हैं, यह कदम न केवल ईरान की महिलाओं की हिम्मत और साहस को दर्शाता है, बल्कि यह उन ताकतों को भी जवाब दे रहा है जो ईरान और इस्लामिक दुनिया को, अशिक्षित, अप्रगत, दबी हुई कमजोर समझते हैं, इन का कहना है कि वे अपने देश और सभ्यता संस्कृति की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जा सकती हैं, उनका यह कदम दुनिया को यह बताने के लिए है कि वे डर के नहीं, बल्कि अपने देश की रक्षा के लिए हर समय तैयार हैं।

कफ़न पहनने का यह प्रतीकात्मक कदम यह दर्शाता है कि ये महिलाएं अपनी जान को जोखिम में डालने से

नमाज कायम करें जकात देते रहें



जोतरूहल्ला का सरकारी विद्यालय बना मिसाल, 12वीं और 10वीं में शानदार प्रदर्शन

पहाड़ी ब्लॉक के महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय जोतरूहल्ला ने इस वर्ष शानदार परिणाम देकर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। विद्यालय ने अपने पिछले रिकॉर्ड को तोड़ते हुए ब्लॉक में पहला स्थान हासिल किया है।

कक्षा 12वीं में छात्र जरजीस ने 93.40% अंक लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया, वहीं साहिल (91.40%) दूसरे और जमील (88.20%) तीसरे स्थान पर रहे। बालिकाओं में निकिता

वर्मा ने 84.20% अंक हासिल कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। खास बात यह रही कि 7 विद्यार्थियों ने 80% से अधिक अंक हासिल किए।

कक्षा 10वीं में भी विद्यालय का परिणाम 100% रहा, जो इसकी निरंतर गुणवत्ता को दर्शाता है।

इस सफलता का श्रेय विद्यालय के प्रिंसिपल राजकुमार और समर्पित स्टाफ को दिया जा रहा है, जो दिन-रात विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए

कार्य कर रहे हैं।

विद्यालय प्रबंधन और अभिभावकों ने इस उपलब्धि पर खुशी जताई है और मेधावी छात्रों को सम्मानित करने के लिए स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) पर पुरस्कार देने की घोषणा की है।

स्थानीय लोगों का मानना है कि इस तरह की उपलब्धियां भविष्य में छात्रों को सरकारी सेवाओं में सफलता दिलाकर क्षेत्र का नाम रोशन करेंगी।

-इंजी. वसीम अकरम

शाहरूख खान (आईएस) का सम्मान

पुन्हाना। आज, मेरी उतावाद के शाह रुख खान—जो हमारे युवाओं के लिए एक सच्ची प्रेरणा हैं—के साथ एक बहुत ही आत्मीय और व्यक्तिगत मुलाकात हुई, और मैंने उन्हें अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। पुन्हाना में श्री फारूक अहमद द्वारा एक भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर पूर्व विधायक चौधरी अब्दुर रहमान, अधिवक्ता चौधरी शेर मोहम्मद, पूर्व जिला प्रमुख हाजी इसहाक, श्री अख्तर हुसैन (उतावाद के पूर्व सरपंच), श्री फारूक अहमद (मालुका के पूर्व सरपंच), और पुन्हाना क्षेत्र के कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। निस्संदेह, शाह रुख खान और इंशा खान द्वारा हासिल की गई यह उपलब्धि—यानी यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन (UPSC) की परीक्षा को बेहतरीन अंकों के साथ सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करना—हमारे युवाओं के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

तुम एक साधारण पक्षी की तरह, महज़ एक दाने के लिए क्यों झुकते हो? अपनी उड़ान को ऊँचा रखो, और ऊपर उठकर एक 'गरुड' बनो।

हारून छिरकलाउत



महामहिम राज्यपाल कर्नाटक सरकार श्री थावरचंद्र गहलोत जी से आत्मीय सौजन्य भेंट करते हुए मो. हनीफ चिश्ती (संपादक) एवं साथी। इस अवसर पर कई सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर एक लंबी चर्चा हुई उन्होंने बातों की गंभीरता को समझते हुए उन्हें पूर्ण करने में सहयोग का आश्वासन दिया

मेवात अकादमिक का वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

अलवर. घांसोली स्थित मेवात अकादमिक का वार्षिक सम्मेलन पिछले दिनों भव्यता के साथ हजारों बच्चों एवं गण मान्य जनो की उपस्थिति मे संपन्न हुआ जिसके मुख्य अतिथि हाल ही मे, UPSC, मे, IAS के लिए चयनित हुए इंशा खान एवं, ADM, शोकट अली थे।

मंच पर आयोजकों द्वारा इंशा खान,

संस्था के भामा शाह शोकट अली, एडवोकेट, हारून जी को सम्मानित किया गया।

अतिथियों द्वारा शिक्षा की उपयोगिता पर संबोधित करते हुए उपस्थिति जनो से कहा कि शिक्षा मे भागीदारी को बढ़ाने हेतु बड़े स्वपन पालकों को देखना चाहिये, तथा मेवात शिक्षा कोष मे लड़कियों की शिक्षा को आगे जारी

रखने मे उनके दिये सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

प्रोग्राम को एमिद समूह के कासिम मेवाती, हाजी शमशद, CA, मुख्तियार अहमद, हारून न (adv) मास्टर शफी, सरदार सेवोगुह, जसमाल खान, और लीडर छात्राओं सहित स्कूल की प्रिंसिपल नूर बनो ने भी संबोधित किया।

जवाब (सीधा और आसान)

सबसे पहले बात साफ कर लें-कुरान की आयतें आधी पढ़ने से गलत मतलब निकलता है। इसलिए पूरी बात समझना जरूरी है।

1 'एक इंसान का कत्ल पूरी इंसानियत का कत्ल'-कुरान में कहाँ है

यह बात कुरान में साफ लिखी है:

सूरह अल-माइदा (5:32)

'जिसने किसी एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या की- तो मानो उसने पूरी इंसानियत की हत्या की, और जिसने एक जान बचाई उसने पूरी इंसानियत को बचाया।'

यानी बिना वजह किसी को मारना इस्लाम में बड़ा गुनाह है।

2 'जहाँ पाओ काफिरों को कत्ल करो'- असली संदर्भ क्या है

यह आयत अक्सर आधी बताई जाती है। सूरह अल-बक़रा (2:190) पहले क्या कहती है: 'जो तुमसे लड़ते हैं तुम भी अल्लाह के रास्ते में उनसे लड़ो, लेकिन ज्यादती मत करो। अल्लाह ज्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता।'

अब जिस आयत का लोग हवाला देते हैं:

सूरह अल-बक़रा (2:191)

'और उनसे लड़ो जहाँ तुम उनसे युद्ध में भिड़ो'

मेरा मुस्लिम समाज से आज सीधा और सरल सवाल है और मुझे उम्मीद है कि वो सही जवाब देंगे, सवाल - ये काफिर कौन होते हैं और काफिरों को क्यों मारना चाहिए, जवाब दे

ध्यान दें:

यह युद्ध (war) की बात है, आम लोगों को मारने की नहीं।

यह उस समय उतरी जब मक्का के लोग मुसलमानों को मार रहे थे, घरों से निकाल रहे थे और युद्ध कर रहे थे।

यानी: युद्ध में लड़ने वालों से लड़ो शांतिपूर्वक रहने वालों को मारो-ऐसा कहीं नहीं लिखा।

3 क्या हर गैर-मुस्लिम 'मारने योग्य काफिर' है नहीं। कुरान खुद कहता है: सूरह अल-काफ़िरून (109:6) 'तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिए, मेरा धर्म मेरे लिए।'

सूरह अल-बक़रा (2:256)

'धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं।'

अगर सबको मारना होता तो 'धर्म में ज़बरदस्ती नहीं' क्यों कहा जाता

इंतकाल

बालसमद। मेवाती समाज के हाजी हिदायतुल्ला, इनायतुल्ला के वालिद हाजी निसार खान साहब का पिछले दीनो इंतकाल हो गया, जिन्हें स्थानिय कब्रिस्तान मे सुपुरदे खाक किया गया।

नागदा। मेव बिरादरी के जनाब साबीर मेव (मोर वाले) के पोते अमजद मेव, अम्मू का पिछले दिनों इंतकाल हो गया, जिन्हें स्थानिय कब्रिस्तान मे सुपुरदे खाक किया गया।

धरमपुरी। मेवाती बिरादरी के जनाब असल म खान, अर्शद् खान, अशरफ खान के वालिद हाजी सलीं म जमीदार, और वालदा हज्जानी अस्मत बी का पिछले दिनों इंतकाल हो गया, जिनकी नामजे जनाजा असवा मस्जिद मे पढ़ी जाकर वही कब्रिस्तान मे सुपुरदे खाक किया गया.आप अपने पीछे भरा पुरा परिवार छोड़ गये.

न्यू मेव टाइम परिवार अल्लाह से दुवा करता है कि वह मरहमो को मगफिरत अता कर, जंनतुल् फिरदोष मे जगह दे.